



पाठ्यम और नियम

पिछले पाठ में आपने योगसूत्र के कुछ सूत्र और श्लोक के बारे में जानकारी प्राप्त की है। साथ ही आपने (?) का भी अध्ययन किया है। पतंजलि योग एक प्रणाली है जिसके आठ स्तर हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतिहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इसलिए इसे अष्टांग योग (योग के 8 स्तर) कहा जाता है। प्रस्तुत पाठ में आप यम के बारे में जानेगें जो सामाजिक स्तर और नियम अर्थात व्यक्तिगत अनुशासन के बारे में जान पाएगें।



उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे :

- यम और नियमों की व्याख्या कर पाने में;
- पहले तीन यम—अहिंसा, सत्य और असत्य के मध्य अंतर कर पाने में; और
- सोच, संतोष और तपस के प्रथम तीन नियमों की व्याख्या कर पाने में।

11.1 यम

यह अष्टांग का प्रथम पद है। यम का अर्थ है सामाजिक नियम। 5 यम होते हैं-अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन 5 यम में से आप प्रथम तीन यम-अहिंसा, सत्य और असत्य के बारे में पढ़ेंगे।



टिप्पणी

I. अहिंसा (Non-violence)

अहिंसा का अर्थ है कार्य, भाषा और विचारों से किसी भी प्रकार की हिंसा ना करना। पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन करना ही प्रथम यम है। आइए बुद्ध और अंगुलिमाल की सुंदर कहानी पढ़ते हैं। यह कहानी आपको अहिंसा का अर्थ और उसका जीवन में क्रियान्वयन करना बतायेगी।

बुद्ध और अंगुलिमाल

यह कहानी प्रारंभ होती है तक्षशिला विश्वविद्यालय में जो प्राचीन भारत का एक महान विश्वविद्यालय था। वहाँ अहिंसक नाम का विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करता था। वह सर्वश्रेष्ठ शिष्य था। इसीलिए अन्य विद्यार्थियों को उससे जलन होती थी। उन्होंने मन



घंडत कहानी सुनाकर अध्यापक को भ्रमित कर दिया। उन्होंने कहा कि अहिंसक दुष्ट है। अध्यापक ने इस झूठ पर यकीन कर लिया और अहिंसक से पीछा छुड़ाने की तरकीब सोचने लगा। अध्यापक यह जानता था कि अहिंसक कभी भी बड़ों का अपमान नहीं करता है। वह हमेशा उनकी बात मानता है। इसलिए अध्यापक ने अहिंसक को एक कठिन कार्य करने को दिया। अध्यापक ने अहिंसक को बुलाया और कहा कि स्नातक होने के लिए उसे एक हजार उंगलियाँ इकट्ठी करनी होंगी। वह (अध्यापक) जानता था कि यह कार्य नामुमकिन है और



अहिंसक कभी भी वापिस नहीं आएगा। हार मानने की जगह अहिंसक एक हजार उंगलियाँ इकट्ठा करने निकला। किंतु वह कुछ दिनों में जान गया कि लोग आसानी से उंगलियाँ नहीं देंगे। इसलिए वह जंगल में छुप गया। वह लोगों की हत्या करके उंगलियाँ एकत्रित करने लगा। किंतु उसके पास उंगलियाँ रखने के लिए स्थान नहीं था। इसलिए उसने एक तार अपनी गर्दन के चारों तरफ बांधी जिसमें वह उंगलियाँ बांधता गया। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पडा। अंगुलिमाल का अर्थ है अंगुलियों की माला।

एक दिन बुद्ध अपने मठ से बाहर निकले। अंगुलिमाल के रहने का कारण जानकर भी बुद्ध बिना डरे उसी स्थान पर गए। वह अपने रास्ते पर बढते चले गए। एक विशेष दिन अंगुलिमाल को केवल एक उंगली ही एकत्रित करनी थी। वह शेष 999 उंगली इकट्ठी कर चुका था। इसी समय उसने बुद्ध को जंगल की ओर आता देखा। वह उनकी हत्या करने की इरादे से गया ताकि वह अपनी आखिरी उंगली इकट्ठी कर सके। वह बुद्ध के पीछे बहुत तेजी से भागा किंतु उन्हें पकड नहीं पाया। वह थक कर गुस्सा हो गया।

अंगुलीमाला चिल्लाया, “रुक जाओ।” बुद्ध मुड़े और शांति से अंगुलिमाला से कहा, “तुम्हें हत्या छोडकर अहिंसा का रास्ता अपनाना चाहिए।” अंगुलीमाला उनके शब्दों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने अपने हथियार फेंक दिये। वह भगवान बुद्ध के मठ जाकर भिक्षुक बन गया।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि बुद्ध अहिंसा को मानने वाले थे। उन्होंने हत्यारे अंगुलीमाला को भिक्षुक के रूप में परिवर्तित किया। अहिंसा एक व्यक्तिगत अभ्यास है जिसमें खुद को तथा दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाया जाता है। इसलिए अहिंसा का पालन करें।

II. सत्य (Truthfulness)

अहिंसा सत्य के बाद दूसरा यम है। सत्य का अर्थ है सदा सत्य का पालन करना। आइए कबीर और चोर की सुंदर कथा से सत्य का अर्थ समझते हैं।

कबीर और चोर

कबीर एक कवि व संत थे। एक दिन वे कपडा बुनते हुए दोहा गा रहे थे। संत कार्य करते हुए भी दिव्य विचारों में रहते हैं। तभी उनकी झोंपडी का दरवाजा खुला और एक चोर अंदर आया। वह कहने लगा, “जल्दी से मुझे छुपने की जगह



बताइए। पुलिस मेरा पीछा कर रही है। उसने अपनी यह मांग कबीर के सामने रखी। कबीर ने शांति से उसे रूई के ढेर के पीछे छुपने का इशारा करते हुए कहा, “वहाँ, तुम सुरक्षित हो।” चोर वहाँ छुप गया। तभी पुलिसवाला आया और पूछा, “मैं एक चोर को पकडने की कोशिश कर रहा हूँ। मैंने उसे इसी दिशा में भागते हुए देखा है। क्या आपने उसे देखा है?”

कबीर ने अपने अनोखे अंदाज से रूई के ढेर की तरफ इशारा किया। पुलिस वाले ने कबीर के चेहरे की ओर देखकर सोचा कि संत तो अपनी ही दुनिया में रहते हैं। उसने कबीर की बात अनसुनी कर दी और वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद चोर सुरक्षित वहाँ से निकल आया और कबीर से बोलने लगा-आप संत है। आपको हर उस व्यक्ति जो आपकी शरण में आता है, उसकी रक्षा करनी चाहिए। चाहे वह अपराधी ही क्यों न हो? तुमने मेरी छिपने की जगह को क्यों बताया? क्या होता यदि मैं पकडा जाता?”

कबीर ने प्रेमपूर्वक चोर से कहा, “मेरे प्रिय मित्र, मैंने सच कहा क्योंकि मैं जानता हूँ कि सच में ही वह ताकत है जो तुम्हें सुरक्षित कर सके। यदि मैं झूठ बोलता तो हम दोनों समस्याओं में फंस गये होते। सत्य ही तुम्हें लंबे समय तक बचा सकता है। झूठ तुम्हें दुखी और बर्बाद कर सकता है।” चोर को अपनी गलती का एहसास हुआ। वह अब कबीर का शिष्य बन गया।



टिप्पणी



टिप्पणी

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि सच के प्रवर्तक कबीर ने चोर को सही मार्ग दिखाया। यदि आप स्वयं के प्रति सच्चाई नहीं रखते हैं, तो आप खुद को नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसलिए सत्य का अहसास करें।

III. अस्तेय (Dishonesty)

इसके अंतर्गत सत्य को निरंतर मानना महत्वपूर्ण है। अस्तेय का अर्थ है चोरी नहीं करना। लकड़हारे की कहानी यह दिखाती है कि कैसे एक लकड़हारे की सच्चाई उसे अमीर बनाती है। यह कहानी आपको अस्तेय (सत्य पर डटे रहना) का सही अर्थ समझाती है।

लकड़हारा और उसकी कुल्हाड़ी

कालिदास एक ईमानदार लकड़हारा था। वह उदयपुर गांव में रहता था। इस गांव में घना जंगल था। सभी लोग अपनी आजीविका जंगल से चलाते थे। कालिदास अक्सर लकड़ी काटने जंगल में जाता था। वह लकड़ी काटकर पास के बाजार में बेचता था। अपनी छोटी सी आय से वह अपने परिवार को चलाता था।

एक दिन वह रोज की तरह लकड़ी काटने जंगल गया था। वह नदी के किनारे पेड़ से लकड़ी काट रहा था कि कुल्हाड़ी उसके हाथ से छूटकर नदी में गिर गयी। गरीब लकड़हारा दुखी हो गया। उसके पास एक ही कुल्हाड़ी थी। अपने भविष्य के बारे में सोचकर वह रोने लगा। उसका रोना सुनकर जल देवी प्रकट हुई। वह लकड़हारे से रोने का कारण पूछने लगी। लकड़हारे ने अपनी पूरी व्यथा जल देवी को बताई। सभी बातें सुनने के बाद जल देवी वापिस नदी में गई। कुछ देर बाद वह सोने की कुल्हाड़ी लेकर सामने प्रकट हुई

उन्होंने सुनहरी कुल्हाड़ी कालिदास को दिखाकर पूछा, “क्या यह तुम्हारी है?” कालिदास ने कुल्हाड़ी देखी और कहा, “नहीं देवी, यह मेरी नहीं है।” वह कुल्हाड़ी वहीं रखकर जल देवी वापिस पानी में गयी ओर चांदी की कुल्हाड़ी बाहर लेकर आई। उन्होंने फिर कालिदास को दिखाकर पूछा, “क्या यह तुम्हारी है?”

यम और नियम

कालिदास ने कुल्हाडी देखकर कहा, “यह मेरी नहीं है। मैं गरीब लकड़हारा हूँ। मैं कैसे सोने और चांदी की कुल्हाडी रख सकता हूँ। मेरे पास तो लोहे की कुल्हाडी है।” यह सुनते ही जल देवी वापिस नदी में गयी और इस बार कालिदास की कुल्हाडी लेकर आयी। अपनी कुल्हाडी देखकर कालिदास बेहतर खुश हुआ। उसने जल देवी को धन्यवाद दिया। कालिदास की ईमानदारी से जल देवी प्रसन्न हुई। उन्होंने उसे लोहे के साथ-साथ सोने और चांदी की कुल्हाडी भी दे दी।



हम लकड़हारे के उदाहरण से देख सकते हैं कि अस्तेय ईश्वर की तरफ से दिया गया वरदान है। हमें इस अभ्यास करना चाहिए।



पाठगत प्रश्न 11.1

1. कबीर की झोंपडी में छुपने की कोशिश किसने की?
2. चोर का पीछा कौन कर रहा था?
3. कालिदास कौन था?
4. कालिदास ने सुनहरी कुल्हाडी लेने से मना क्यों किया?
5. अंगुलीमाल भगवान बुद्ध का पीछा क्यों कर रहा था?

11.2 नियम

नियम अष्टांग योग का दूसरा पद है। नियम का अर्थ है व्यक्तिगत आचरण नियम। ये 5 नियम हैं: शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणीधान। इन 5 नियमों से प्रथम तीन के बारे में हम पढ़ेंगे जिससे हमें नियम की साफ स्पष्ट होगी।

कक्षा-III



टिप्पणी



टिप्पणी

I. शौच (Cleanliness)

पांच नियमों में सबसे पहला है शौच। इसका अर्थ है शुद्धता। नकारात्मक विचारों को त्याग कर आप सोच को सकारात्मक व स्वस्थ बनाते हैं। सामाजिक रूप से छोटी-छोटी चीजें जैसे दांत साफ करना आदि कुछ स्थिर नियमों के साथ शौच को अच्छा करते हैं। शरीर व मन की शुद्धि का शौच करते हैं।

शौच दो प्रकार की होती है-बाह्य स्वच्छता जिसमें आपका शरीर और आपके आस पास के स्थान शामिल हैं। आंतरिक स्वच्छता मस्तिष्क को शुद्ध करता है। कुछ लोग अपना घर साफ-सुथरा रखते हैं किंतु बाह्य स्वच्छता नहीं करते हैं। लोग अपने घर के आस पास कचरा फेंकते हैं और सड़क किनारे थूकते और मूत्र त्याग करते हैं। कुछ लोग प्लास्टिक और कचरा सड़क पर फेंकते हैं। कुछ लोग कचरा पात्र का प्रयोग नहीं करते हैं। यह अस्वच्छता की क्रिया है। यह भी सही है कि उचित शौचालय हर स्थान पर उपलब्ध नहीं है। इसलिए अधिकतर लोग बाहर करते हैं। किंतु कुछ लोग शौचालय उपलब्ध होने पर भी प्रयोग नहीं करते हैं। स्वच्छता घर और आस पास तक सीमित नहीं है। यह मानव क्रिया, वातावरण प्रदूषण का भी कारण बनती है। मानव ने अपने क्रियाकलाप से हवा, पानी और धरती को गंदा और प्रदूषित किया है।

हमें कचरा नहीं फेंकना चाहिए। कचरे को कचरा पात्र में डालना चाहिए। खुले में थूकना और मूत्र त्याग करना बंद करना चाहिए। यह तभी करें जब अति आवश्यक हों। ऐसे क्रिया बंद करनी चाहिए जिससे पानी, आवाज और हवा का प्रदूषण हो जो कि लंबे समय तक समाज की सहायता करे। यही क्रिया बाह्य सोच कहलाती है। आंतरिक सोच में हम जलन, नफरत, गुस्सा, लालच, क्रोध आदि को समाप्त करते हैं और प्यार, दोस्ती, आत्मीयता और खुशी का ध्यान रखते हैं।



II. संतोष (Contentment)

संतोष नियमों की नियमावली में दूसरा स्थान रखता है। संतोष आपको खुशी प्रदान करता है। नीचे दी गयी कहानी आपको संतोष का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है।

संतोष का रहस्य

एक छोटे से गांव में घाटी के पास में रहता था। वह सबसे हंसी-खुशी, दयालु और अच्छे व्यवहार से मिलता था। वह हमेशा मुस्कुराता था और अच्छे शब्दों का प्रयोग करता था। जो भी व्यक्ति उससे मिलता था वह खुश होकर ही लौटता था। लोग मानते थे कि वह भरोसेमंद है और उसे अच्छा मित्र मानते थे।

एक ग्रामीण व्यक्ति उसका रहस्य जानने के लिए उत्सुक रहता था कि वह कैसे हमेशा खुश रहता है। वह इस बात से आश्चर्यचकित था कि उस व्यक्ति के मन में किसी के लिए कोई दुर्भावना नहीं है।

एक बार वह व्यक्ति उसे सड़क पर मिल गया। ग्रामीण ने उससे पूछा, “अधिकतर लोग लालची और मतलबी होते हैं। यह सब तुम्हारी तरह मुस्कुराते नहीं हैं। ना ही वह सब तुम्हारी तरह सबकी मदद करते हैं। इस बात की क्या व्याख्या है?” वह व्यक्ति उसकी तरफ देखकर मुस्कुराया और कहा, “जब आप खुद के साथ शांति बना सकते हैं, तभी आप पूरी दुनिया के साथ शांति बना सकते हैं। यदि आप अपने अंदर की आत्मा को जान पाते हैं तो आप उसी आत्मा को दूसरे व्यक्ति में क्यों नहीं खोजते हैं? खोज पूरी होने पर आप दयालु और सरल व्यवहार करने वाले हो जाते हैं।”

“यदि आपके विचार नियंत्रण में हैं तो आप मजबूत और सुदृढ़ हो जाते हैं।”

“मानव व्यक्तित्व एक रोबोट के कार्यक्रम की तरह होता है। वह कुछ कार्य निर्देश मिलने पर करता है। आपके विचार और आदतें ही वह उपकरण हैं जो व्यक्तित्व को नियंत्रित रखता है। यदि आप इस कार्यक्रम पर ध्यान नहीं देंगे तो



आप आजाद हो जाएंगे और आपका ईश्वर और खुशी आपके अंदर से बाहर निकल जाएंगे। इनके रहने से ही आप में सद्गुणों का विकास होता है।”

“किंतु इसके लिए बहुत ज्यादा कार्य करना महत्वपूर्ण है। अच्छी आदतों का विकास करना चाहिए। योग्यता, एकाग्रता तथा विचारों पर नियंत्रण मजबूत होना चाहिए। यह कार्य मुश्किल और अंतहीन है। इस कार्य के लिए बहुत सारी बाधाओं को पार करना आवश्यक है।” ग्रामीण ने अपना पक्ष रखा।

वह व्यक्ति कहने लगा, “मुश्किलों के बारे में मत सोचो अन्यथा न ही तुम देखोगे और न ही अनुभव करोगे। अपनी भावनाओं को शांत रखें, विचारों को नियंत्रण में रखें और लोगों के साथ रहने का प्रयास करें। शांत रहें और भावनाओं में ना बहें।”

ग्रामीण ने पूछा, “बस यही है रहस्य?”

वह व्यक्ति बोला, “अपने विचारों को देखने का प्रयास करें। आप यह जानने का प्रयास करें कि विचार किस प्रकार आते हैं और जाते हैं। शांत रहकर विचारों को जानें। यही पल आपको स्वयं के साथ जोड़ेगा। यह पल सीमित अवश्य होंगे किंतु आपको मजबूती देंगे। शांति, शक्ति, दया और प्रेम की ताकत को पहचानकर आप ईश्वर के साथ हो जाएंगे और आपकी चेतना बढ़ेगी। लालच, सीमित, दंभ आदि आपको छू भी नहीं पाएंगे।”

ग्रामीण ने कहा, “मैं आपके शब्दों को याद रखूंगा। एक और बात है जिसके बारे में मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ। आप वातावरण से प्रभावित नहीं होते हैं। सबसे दया भाव से बातें करते हो। सबकी सहायता करते हो। लोग आपके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। तुम्हारी अच्छाई का गलत फायदा भी नहीं उठाते हैं।” “अच्छाई और दयालु होना आपकी कमजोरी नहीं हो सकती है। जब आप अच्छे हैं तो आप मजबूत भी हैं। जब आपकी आंतरिक शक्ति मजबूत होती है तभी लोग तुम पर दबाव नहीं बना सकते हैं। जब आप अंदर से मजबूत और शांत हो, तभी आप लोगों की मदद कर सकते हैं। इस स्थिति में आप वह करते हैं जो आप करना



चाहते हैं। आप ताकत से कार्य करते हैं ना कि कमजोरी से। अच्छाई कमजोरी नहीं होती है। कुछ लोग अच्छाई को गलत समझते हैं। जबकि अच्छाई शांति और ताकत के साथ मिलकर इन्सान को सबल देती है।”

ग्रामीण ने कहा, “बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी व्याख्या और सलाह मुझे समझ आ गयी है। मैं भी खुश और संतोषी हो गया हूँ।”

उपरोक्त कहानी से हम यह समझ सकते हैं कि ग्रामीण ने खुशी का रहस्य जाना कि किस प्रकार वह स्वयं एवं अपने पास रहने वाले को प्रसन्न रख सकता है।

III. तपस (Aistprotu)

तपस का अर्थ है अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठोर हो जाना। यह एक सकारात्मक प्रयास है जो कि खोजकर्ता करता है जब तक वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाता। पाणिनि की इस कहानी से आइए तपस का अर्थ समझते हैं।

पाणिनि

बहुत पहले सिन्धु नदी के किनारे पाणि नाम का विद्वान और ज्योतिष शास्त्री रहता था। भगवान शिव की कृपा से उनकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्र का नाम पाणिनि अर्थात् पाणि का पुत्र रखा गया। यह बालक सक्रिय था। यह बालक अपने माता-पिता की आंखों का तारा था। यह बालक बड़ा होकर चंद्रमा की भांति सुंदर बना।

एक दिन पाणि के घर उनके मित्र (जो महान हस्तरेखा शास्त्री और विद्वान थे) आए। उन्हें सर्वश्रेष्ठ भोजन और आदर-सत्कार दिया गया। भोजन करने के पश्चात् उस व्यक्ति ने पाणिनि को अपने साथ बैठने को कहा। पाणिनि खुश होकर उनके साथ बैठ गया। उन्होंने बालक की दायीं हथेली देखी। उनकी अभिव्यक्ति में परिवर्तन हो गया। वह दुखी हो गए। इस पर पाणि ने उनसे उनके परेशान होने का कारण पूछा। पाणि के पूछने पर उन्होंने कहा, “ओह ! पाणि मेरे



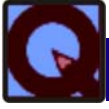
मित्र तुम बहुत विद्वान हो। लोग तुम्हारे पास सलाह के लिए आते हैं। किंतु भाग्य ने तय किया है कि तुम्हारा पुत्र अनपढ़ ही रहेगा। उसकी हथेली में शिक्षा की कोई रेखा नहीं है।” पाणि ने अपने मित्र से क्षमा मांगते हुए कहा, “मित्र, मुझे तुम्हारी विद्वता पर संदेह नहीं है किंतु क्या यह संभव नहीं कि मेरे पुत्र का हाथ देखने में तुमसे कोई त्रुटि हो गयी हो।” उस व्यक्ति ने उनकी ओर देखकर कहा, “मेरे मित्र ! मैंने तुम्हारे पुत्र का हाथ एक बार नहीं दो बार देखा है। उनके हाथों में शिक्षा की रेखा नहीं है। उसका जन्म ही अनपढ़ रहने के लिए हुआ है।”

पाणि ने दुखी होकर अपनी आंखें बंद कर लीं। वह कहने लगा, “यदि यही ईश्वर की इच्छा है तो यही सही।” पाणिनि यह वार्तालाप सुन रहा था। यह विद्वान व्यक्ति के पास आकर पूछने लगा, “महाशय ! यदि मेरे हाथों में शिक्षा की रेखा होती तो वह किस स्थान पर होती?” विद्वान व्यक्ति ने अपनी हथेली में शिक्षा की रेखा बताई। वह उस बालक के लिए दुखी हुआ जो इतना संस्कारी और मृदुभाषी था। बालक घर से बाहर की ओर भागा। थोड़ी देर बाद वापिस आने पर उसने विद्वान व्यक्ति से पूछा, “क्या मैं अब विद्वान बन जाऊंगा? क्या मैं अब अपने पिता का नाम रौशन कर पाऊंगा।” विद्वान व्यक्ति ने उसकी ओर देखा और पाया कि बालक की हथेली से खून टपक रहा था। जहाँ शिक्षा रेखा को होना था वहाँ तेज धार वाले पत्थर से हथेली को काटा गया था। दोनों व्यक्तियों के पास शब्द नहीं थे। पाणिनि ने बड़ा होने पर ज्ञान के लिए उत्कंठा और जिज्ञासा दिखाई जिससे उनके पिता प्रसन्न थे। विद्वान बनने हेतु पाणिनि ने भगवान शिव की आराधना एवं तपस्या की। कई वर्षों बाद उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए। पाणिनि ध्यान मग्न थे। इसलिए उसने शिव जी को देखा तक नहीं। पाणिनि का ध्यान समाप्त करने हेतु शिव जी ने अपना डमरू बजाया। डमरू की आवाज कानों में पडने पर पाणिनि जागा और ईश्वर को प्रणाम किया। भगवान शिव ने अपना आशीर्वाद दिया।

ऐसा माना जाता है कि पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण के 14 सूत्र दिए हैं जो कि

शिव जी के डमरू की आवाज पर आधारिक हैं। इन्हें महेश्वर सूत्र कहा जाता है। इन्हें अष्टाध्यायी अर्थात् आठ पाठ भी कहते हैं। यह वेदांग की व्याकरण शाखा की आधार पुस्तक भी है।

उपरोक्त कहानी से हम कह सकते हैं कि पाणिनि ने भी कठोर तप एवं परिश्रम से अपना लक्ष्य प्राप्त किया है। यह भी ज्ञात हुआ कि सकारात्मकता से आप अपना उद्देश्य पा सकते हैं।



पाठगत प्रश्न 11.2

1. सोच के दो प्रकार के नाम लिखिए।
2. पांच नियमों के ज्ञान लिखिए।
3. अष्टाध्यायी किसने लिखा?
4. पाणिनि की हथेली देखकर विद्वान को दुख क्यों हुआ?
5. डमरू की ध्वनि किसने बजायी?



आपने क्या सीखा

प्रस्तुत पाठ में आपने यम और नियम के बारे में पढ़ा है। आपने अहिंसा के बारे में 'बुद्ध और अंगुलीमाला' की कहानी से सत्य के बारे में 'कबीर और चोर' से और अस्तेय के बारे में 'लकड़हारे और कुल्हाड़ी' की कहानी को सीखा है। आपने सोच का अर्थ संतोष का रहस्य और तपस का महत्व कहानियों के माध्यम से सीखा। इन सब कहानियों से आपको यम और नियम का अर्थ पता चला।



पाठांत प्रश्न

1. यम और नियम क्या है?
2. इस पाठ में वर्णित तीन यम को समझाइए?



टिप्पणी

3. इस पाठ में वर्णित नियम की विस्तृत विवेचना कीजिए।
4. पाणिनि ने अपने हाथ को नुकीले पत्थर से क्यों काटा?
5. नदी या जल देवी ने सभी कुल्हाड़ी लकड़हारे को क्यों दी?



उत्तरमाला

11.1

1. चोर
2. लकड़हारा
3. क्योंकि वह अस्तेय में विश्वास करता था।
4. ताकि वह 100 उंगलियाँ एकत्रित कर सके।
5. पुलिसवाला

11.2

1. i) आंतरिक सोच
ii) बाह्य सोच
2. पांच नियम-सोच, संतोष, तपस, स्वाध्याय और ईश्वरी प्राणीधम
3. पाणिनि ने अष्टाध्यायी (अर्थात् आठ पाठों) की रचना की।
4. क्योंकि उसके हाथों में शिक्षा की कोई रेखा नहीं थी।
5. भगवान शिव

